

भगत नामदेव – सबद ५५
दास अनिन मेरो निज रूप ॥
रागु सारंग, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १२५२

दास अनिन मेरो निज रूप ॥

दरसन निमख ताप लई मोचन परसत मुकति करत गृह कूप ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मेरी बाँधी भगतु छडावै बाँधै भगतु न छूटै मोहि ॥

एक समै मो कउ गहि बाँधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥ १ ॥

मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥

नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥ २ ॥ ३ ॥

सार: भारतीय अवधारणा 'ताप-लयी' यह बताती है कि मनुष्य का दुःख तीन परस्पर जुड़े हुए स्रोतों से उत्पन्न होता है- हमारा शरीर और मन, संसार के साथ हमारे संबंध और वह अप्रत्याशित शक्तियाँ जो हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। यह दर्शाता है कि दुःख मानवीय यात्रा का एक अनिवार्य हिस्सा है। हम अपनी परिस्थितियों का चुनाव नहीं कर सकते लेकिन यह अवश्य चुन सकते हैं कि हम उनका सामना किस प्रकार करें। गहन आत्मचिंतन के माध्यम से दुःख ज्ञान, मुश्किलों से उबरने की क्षमता और दया-भाव जगाने का माध्यम बन सकता है। इस सांझे मानवीय अनुभव को स्वीकार करके हम दुःख को विकास के अवसर के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

दास अनिन मेरो निज रूप ॥

एकत्व के प्रति समर्पण ही मेरा स्वाभाविक रूप है। यह अलगाव न होने और एकता को ही परम सत्य मानने का संकेत देता है।

दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुक्ति करत गृह कूप ॥ १॥ रहाउ ॥

दर्शन मात्र से ही तीनों प्रकार के ताप अर्थात् दुःख मिट जाते हैं। इसके स्पर्श से ही हम सांसारिक मोह-माया के गहरे बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। इसका अर्थ है कि चेतना के सानिध्य मात्र से ही मानसिक पीड़ा शांत हो सकती है और सांसारिक भ्रम टूट सकते हैं। (१)(विराम)

मेरी बाँधी भगतु छडावै बाँधै भगतु न छूटै मोहि ॥

मेरे द्वारा बांधे गए बंधनों से तो भक्ति मुक्त कर देती है लेकिन भक्ति ने मुझे जिस प्रेम-बंधन में बांधा है, उससे मैं मुक्त नहीं हो सकता। यह प्रेम के विरोधाभास को दर्शाता है, सच्ची निष्ठा सकारात्मकता के साथ बंधन खोलती है जो नकारात्मकता कभी नहीं कर सकती।

एक समै मो कउ गहि बाँधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥ १॥

जिस क्षण, इसने मुझे अपनी समझ से बांध लिया तब फिर मेरे पास कोई तर्क या संशय शेष नहीं रहा। यह दर्शाता है कि जब भक्ति अंतरात्मा को जकड़ कर प्रबल हो जाती है तब अहं के पास कोई तर्क नहीं बचता। (१)

मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥

मैं जीवन भर प्रकृति के नियमों से बंधा रहा और इस जीवन के प्रति समर्पित हूँ। यह आपसी जुड़ाव को दर्शाता है, सर्वव्यापी सत्ता का अनुभव अपनाए गए सद्गुणों से होता है और वह सद्गुण समर्पित मन के माध्यम से जीवित रहते हैं।

नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥ २॥ ३॥

नामदेव कहते हैं कि जिनके मन में ऐसी समझ होती है, उनके भीतर ऐसा ही प्रेम प्रकाशित होता है। इससे पता चलता है कि प्रेम कोई प्रदर्शित करने वाला काम नहीं बल्कि तब स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है जब उसका सार मन की वास्तविक अवस्था से मेल खाता है। (२)(३)

तत्त्व: भगत नामदेव, गहन सत्य बताते हैं, प्रेम केवल कर्म नहीं है, यह हमारे सच्चे अस्तित्व से उपजता है। यह तब फलता-फूलता है जब हम दिखावे, डर और दूसरों से मान्यता पाने की आवश्यकता से मुक्त हो जाते हैं। इस खुलेपन में, प्रेम अहं से ऊपर उठ जाता है और हमें एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होने का अवसर देता है। जब हमारा आंतरिक सच हमारे कर्मों के साथ एकरूप हो जाता है तब प्रेम में सच्चाई और गहराई आ जाती है। वह न तो स्वामित्व का अधिकार चाहता है और न ही स्वीकृति, बल्कि अलगाव की भावना के मिटने के साथ स्वाभाविक रूप से परवाह और अपनेपन की अभिव्यक्ति बन जाता है। इस प्रकार प्रेम उस हृदय की भाषा बन जाता है जो एकत्व से जुड़ा हुआ है और गहन तथा अर्थपूर्ण संबंधों को विकसित करता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com